Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 1, January -March 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

शोधकर्ता
अभिषेक कुमार
चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
Email. Id. abhi92.np@gmail.com

शोध पर्यवेक्षक
डॉ0 आशीष पाठक
शहीद मंगल पाण्डेय राजकीय महिला स्नाकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ

https://doi.org/10.5281/zenodo.21440471

सार :– ***वैचारिक शक्ति के फलस्वरूप ही रचनात्मक व सृजनात्मक शक्ति का विकास होता है जो कि किसी भी राष्ट्र के लिए आवश्यक है। सृजनात्मक व रचनात्मक शक्ति से राष्ट्र एवं समाज को नवाचार का प्रोत्साहन मिलता है। वर्तमान युग में छात्र भी मानसिक द्वंद, अस्पष्ट लक्ष्य, विभिन्न विचारधाराओं के बीच सृजनात्मक व रचनात्मक प्रवृत्ति खो रहा है। जे0 कृष्णमूर्ति जी के अनुसार जहाँ द्वंद है वहाँ सृजनशीलता असंभव है। राष्ट्र के विकास व समाज में बेहतर समन्वय, संतुलन, सजनात्मक व रचनात्मक रहने के लिए एकाग्र होना आवश्यक है। आचार्य अरविन्द जी ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा है कि तम जीवन में चाहे कुछ भी करना चाहो, एक चीज एकदम अनिवार्य है और हर चीज के आधार में है, वह है ध्यान के एकाग्र की क्षमता। शिक्षा–व्यवस्था के निजीकरण की अवधारणा के विकसित होने के साथ ही निजी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, इण्टर कॉलेजों और पब्लिक स्कूलों की संख्या भी देश में तेजी से बढ़ी है। शिक्षा के निजीकरण ने जहाँ एक ओर ज्ञान की सुलभता के अवसरों की वृद्धि की है, वहीं दूसरी ओर शिक्षण–प्रशिक्षण प्रविधियों, शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक के अनुप्रयोगों, कक्षाओं के स्वरूप बदलावों, सूचनाओं की असीमित उपलब्धताओं और व्यावहारिकताओं को बढ़ावा दिया है।***

प्रस्तावना :- शिक्षा मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक है। मनुष्य अपने जन्म से मृत्यु तक शिक्षा प्राप्त करता है और यह प्रक्रिया पूर्ण जीवन चलती रहती है। प्रारम्भ में शिक्षा प्रदान करने का कार्य घर–परिवार एवं समुदाय करते थे। तत्पश्चात् व्यक्ति औपचारिक साधनों जैसे विद्यालय, कॉलज एवं विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण करता है। वर्तमान में शिक्षा का अर्थ काफी व्यापक हो गया है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसकी सहायता से बच्चे का पूर्ण विकास अर्थात् शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास किया जाता है, इस हेतु शिक्षा में मनोविज्ञान ने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मनुष्य के उत्कर्ष का कारण ही ज्ञान है। ज्ञान शक्ति और आनन्द की ओर ले जाता है।

यह मस्तिष्क को अनुशासित रखता है। ज्ञान के द्वारा कर्त्तव्य शुभ–अशुभ, उचितानुचित का विवेक प्राप्त होता है। मानव जीवन के कर्त्तव्यों की जानकारी देकर ज्ञान कुविचारों एवं दुष्कर्मों के प्रति अरूचि का भाव पैदा कर सन्मार्ग पर चलना सिखाता है। शिक्षा में ज्ञान, उचित आचरण और तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट है। इस प्रकार यह कौशलों, व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक और सौन्दर्य विषयक उत्कर्ष पर केन्द्रित है। बच्चों को शिक्षा प्रदान करना कोई सरल काम नहीं है।

बच्चों के लिए विद्यालय भवन बनाने, तथा पुस्तकालय कार्यशाला व खेलने के मैदान दे देने से ही सम्पूर्ण शिक्षा नहीं हो जाती। अध्यापक का वास्तविक शिक्षा पाठ्यक्रम को भली–भाँति प्रकार बच्चों को देना तथा बच्चों द्वारा उसे ग्रहण करने के पश्चात् ही पता चलता है कि कितने स्तर की शिक्षा बच्चों की हुई है। इस प्रक्रिया में शिक्षकों के लिए यह जरूरी है कि वह बच्चों के परिवार के बारे में, तथा बच्चों के पैतृक गुण उनके भाव तथा सामाजिक स्तर आदि के बारे में ज्ञान प्राप्त करें। शिक्षा मनोविज्ञान एक नया ज्ञान है जिसका वैज्ञानिक ढंग से विकास हुआ है। इसके उपयोग से शिक्षा पठन–पाठन में बहुत सहायता मिलती है।

मुख्य रूप से विद्यालय दो प्रकार के होते हैं– आवासीय एवं गैर–आवासीय।

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 1, January -March 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

आवासीय विद्यालयों की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। प्राचीन समय में विद्यार्थी नगर से दूर शांत एवं अनुकूल वातावरण में गुरू के आश्रम में रहते थे। उनमें परस्पर निकटतम सम्पर्क बना रहता था। फलतः बालक का सर्वांगीण विकास गुरू की देखरेख में होता था। इसलिए वर्तमान समय में भी आवासीय विद्यालयों की आवश्यकता महसूस की जाती है।

आवास रहित विद्यालय को पूर्ण विद्यालय नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वह शिक्षा के मुख्य उद्देश्य, बालक के सर्वांगीण विकास के पूर्ण कर पाने में असमर्थ साबित होता है। हमारे देश में माध्यमिक स्तर के विविध प्रकार के विद्यालय संचालित है, जो कि विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व जातीय पृष्ठभूमि पर आधारित है। इस प्रकार का वर्गीकरण अभिभावकों की इच्छा, आकांक्षा एवं सामाजिक आवश्यकता के आधार पर किया जाता है। अतः प्रत्येक अभिभावक की यही आकांक्षा रहती है कि उसके बालक का चहुँमुखी विकास हो और उसका भविष्य उज्ज्वल हो। इसी आकांक्षा पूर्ति हेतु वे ऐसे विद्यालय का चयन करते हैं जो उनकी इन इच्छाओं को पूरा कर सकने में समर्थ हो। इस लक्ष्य की पूर्ति में आवासीय विद्यालय अपनी अहम् भूमिका निभाते हैं। आवासीय विद्यालय के मुख्य उद्देश्य सम्पूर्ण व्यक्तित्व के समन्वित विकास को पूर्ण करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। गैर–आवासीय विद्यालय समाज का लघु रूप नहीं बन सकता और न ही वह दुष्प्रभावों से विद्यार्थी को बचा सकता है।

आवासीय विद्यालय में रहकर विद्यार्थी समाज के लघु रूप से अनुभूति करता है। यहाँ रहकर उसमें उन सभी मानवीय गुणों का विकास सम्भव हो जाता है जो कि उसे एक सुयोग्य नागरिक बनाने हेतु आवश्यक होते हैं। किन्तु वर्तमान समय में शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से हो रहा है। अतः आवासीय की परम्परा भंग हो रही है। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में गैर आवासीय बहुतायात में खुले हुए हैं। गाँवों और शहरों में अधिकतर विद्यार्थी अपने माता–पिता के साथ परिवार में रहते हैं एवं शिक्षा के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर पाते हैं। वातावरण का बालक के व्यक्तित्व के विकास एवं आचरण में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। ''वातावरण उस स्वच्छ पानी एवं जलवायु की तरह है, जो बालक में अन्तर्निहित शक्तियों रूपी बीज को पूर्ण वृक्ष के रूप में विकसित करता है।'' सही वातावरण न मिलने पर यह वृक्ष पनप नहीं पाता है और यह बीज रूप में ही नष्ट हो जाता है। बालक जिस प्रकार के लोगों के बीच रहता है उसका प्रभाव उसके व्यवहार पर पड़ता है।

मनोविश्लेषण वादियों तथा मानव विज्ञान वादियों का कथन है कि बालक का साधारण तथा असाधारण व्यवहार शैश्वावस्था से ही निश्चित होने लगता है। माता–पिता द्वारा नियन्त्रण की सीमा, माता–पिता का कुसमायोजन, माता–पिता की आयु, माता–पिता की अभिवृत्तियाँ, परिवार का सामाजिक–आर्थिक स्तर परिवार के आदर्श, परिवार के सदस्यों की संख्या आदि अनके ऐसी बाते हैं। माता–पिता या परिवार के पश्चात् बालक–बालिकाओं के विकास पर विद्यालय का प्रभाव सबसे अधिक होता है। अच्छा विद्यालय, बालक के सृजनात्मकता, अभिप्रेरणा एवं उपलब्धि के विकास का वास्तविक और महत्त्वपूर्ण कारक है। कुप्पूस्वामी के अनुसार, ''अच्छा विद्यालय ऐसा पाठ्यक्रम प्रस्तुत करता है, जो छात्रों की रूचियों और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न क्रियाओं से परिपूर्ण रहता है। ऐसा विद्यालय स्वस्थ मानसिक विकास का एक वास्तविक कारण है।'' परन्तु आज विद्यालय चाहे आवासीय हो चाहे गैर–आवासीय दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, अभिप्रेरणा, उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण का प्रभाव देखा जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :- प्राचीन समय में वैदिक काल में शिक्षा प्रणाली को इस प्रकार से डिजाइन किया गया था की विद्यार्थियों पर कम से कम तनाव हो। प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में तनाव कम करने के लिए कुछ स्वस्थ प्रविधियों को अपनाया गया था। आज की शिक्षा प्रणाली की समस्याओं का समाधान प्राचीन शिक्षा प्रणाली में पाया जा सकता है। प्राचीन भारत में इंसान के जीवन काल को कुल चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम) में विभाजित किया गया था। वैदिक काल प्रणाली में, छात्रों के रहने और ज्ञान प्राप्त करने के लिए के लिए शिक्षक के घर को ही इस्तेमाल किया जाता था। इसलिए इस गुरुकुल प्रणाली में छात्रों की मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएँ कम हुआ करती थी लेकिन शैक्षिक समस्याएँ ज्यादा हुआ करती थी जैसे प्रत्येक विषय को रटने पर बल दिया जाना, एक ही गुरू के द्वारा सभी विषय पढाना और कुछ अइच्छित और अनुपयोगी विषयों का अध्ययन करना आदि। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में छात्रों के हित के आधार पर शिक्षा दी जाती है, माता–पिता को अपनी खुशी के लिए बालकों पर बिना उनकी रूचि की शिक्षा नहीं थोपनी चाहिए। सामाजिक व राजनीतिज्ञ या किसी अन्य प्रकार का शिक्षा प्रणाली पर कोई प्रभाव या दबाव नहीं होना चाहिए। शिक्षा भ्रष्टाचार से मुक्त होनी चाहिए। हमारी शिक्षा

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 1, January -March 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

प्रणाली में ऐसी नीतियों की कमी है जो विद्यार्थियों की सृजनात्मक विकास के लिए अभिप्रेरित करने के लिए मदद कर सके। स्कूलों में अभिभावक परामर्श, योग, ध्यान, निःशुल्क पुस्तके, मिड–डे–मील, और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को लैपटॉप वितरण तथा छात्रवृति आदि शुरू करने या शिक्षा के विभिन्न स्तरों में इन कार्यक्रमों को शुरू कर इस संबंध में विद्यार्थियों में सृजनात्मकता अभिप्रेरणा और उपलब्धि के विकास के लिए यह सरकार का अच्छा और बड़ा कदम है।

शोध समस्या कथन :- माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :- प्रस्तुत अध्ययन में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनका स्पष्टीकरणकरना आवश्यक प्रतीत होता है।

माध्यमिक शिक्षा :- सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9, 10 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का माध्यमिक स्तर है।

आवासीय विद्यालय :- "बालक एवं बालिकाओं के शिक्षा प्राप्त करने का वह स्थान, जहाँ उनके रहने तथा खाने पीने की सम्पूर्ण व्यवस्था होती है" (हिंदी शब्दकोष)। इस प्रकार के विद्यालय सरकारी या गैर सरकारी दोनो प्रकार के होते है।

गैर–आवासीय विद्यालय :- "बालक एवं बालिकाओं के शिक्षा प्राप्त करने का वह स्थान, जहाँ केवल दिन के समय में ही शिक्षण करवाया जाता है" (हिंदी शब्दकोष)। इस प्रकार के विद्यालय भी सरकारी या गैर सरकारी दोनों प्रकार के होते है।

सृजनात्मकता :- ई0पी0 टोरेंस :– सृजनात्मक चिन्तन रिक्ताओं, त्रुटियों तथा अपर्याप्त एवं अलभ्य तत्वों को समझने में,उनके सम्बन्ध में धारणाये बनाने तथा अनुमान लगाने, धारणाओं का परीक्षण करने परिणामों को अन्य तक पहुंचाने तथा धारणाओं का पुर्नपरीक्षण करके उनमें करने की प्रक्रिया है। सृजनात्मकता एक ऐसी योग्यता है जो किसी समस्या का विद्वतापूर्ण समाधान करने के लिए नवीनतम विधियों एवं स्थितियों का सहारा लेती है तथा व्यक्ति के रचनात्मक उत्पादन में मौलिकता, प्रवाहता, विस्तार कार्य लचीलापन, आदि कारक समाहित रहते है। सृजनात्मक कार्य में कोई नवीन खोज या पुरानी धारणाओं एंव प्रत्ययों का शोध द्वारा मूल्यांकन भी किया जाता है। यह समस्त प्राणियों में पाई जाती है। परन्तु प्रत्येक प्राणी में विभिन्न क्षेत्रों एवं विभिन्न मात्रा में पाई जाती है।

शैक्षिक उपलब्धि :- शैक्षिक उपलब्धि बालक के उन क्रियाकलापों का प्राप्त परिणाम है जो उनकी विद्यालय की शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियों के आधार पर प्राप्त होती है। उपलब्धि परीक्षण के द्वारा ही विद्यालय में विशय सम्बन्धी ज्ञान की परीक्षा एवं विभिन्न कक्षाओं में पाठयक्रम का निर्धारण किया जाता है। अध्यापक प्रत्येक छात्र के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना चाहता है कि उसने सम्बन्धित विशयों में जानकारी कितनी मात्रा में प्राप्त की है ? भौक्षिक उपलब्धि परीक्षण का सम्बन्ध वर्तमान से है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :- प्रत्येक व्यक्ति जिस किसी कार्य को करता है उसका कुछ न कुछ उद्देश्य निहित होता है। उद्देश्य के बिना वह कुछ भी कार्य नहीं करता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य निम्नंलिखित हैं –

1- माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विधार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन ।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :- प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोध अध्ययन को संपादित करने हेतु निम्न परिकल्पना का निर्माण किया गया –

1- माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।

शोध अध्ययन विधि :- प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए "वर्णनात्मक अनुसंधान" की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित प्रतित हौता है इसलिए शोधकर्त्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में विजनोर शहर में अध्ययनरत माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 9, 10 में अध्ययनरत् 500 विद्यार्थियों में से 250 वालक तथा 250 वालिकाओं का चयन किया गया है।

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 1, January -March 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :- प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता ने उद्देश्यों के अनुरूप उपकरणों की खोज की, अतः शोधकर्त्ता ने शोध पर्यवेक्षक एवं शोध क्षेत्र के अन्य अनुभवी विद्वानों से सम्पर्क किया तथा उनके परामर्श से सृजनात्मकता का मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया।

अध्ययन का परिसीमांकन :- प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता ने उद्देश्यों के अनुरूप उपकरणों की खोज की, अतः शोध प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल विजनोर शहर में स्थित माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित है।

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या :- प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित सीमायें निर्धारित हैं।

परिकल्पना परिक्षण :- 1 माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है। इस सम्बन्ध में परिगणित मूल्यों को तालिका संख्या 1.0 में प्रस्तुत किया गया है -

तालिका संख्या -1.0

माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात की तालिका

क्र0 सं0	लिंग	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	मानक त्रुटि	टी-मान
1.	वालक	300	38.91	13.06	1.78	0.98	1.82
2.	वालिकाऐं	300	37.13	10.74			

माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों में सम्मिलित होने वाले के वालक एवं वालिकाओं की सृजनात्मकता का मध्यमान, क्रमशः 38.91 एवं 37.13 तथा मानक विचलन 13.06 एवं 10.74 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 1.82 है। मुक्तांश 398 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.96 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से कम है, अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक। परिणामतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों के वालक एवं वालिकाओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :- अध्ययन की सार्थकता उसके निष्कर्ष से होती है। शोधकर्ता ने अपने समस्या कथन के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश राज्य के विजनोर शहर में माध्यमिक स्तर पर आवासीय एंव गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को शोध की जनसंख्या माना गया है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने प्रस्तावित अनुसंधान में कुल 500 विद्यार्थियों को न्यादार्श के रूप में चयनित किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

- अरोड़ा, रीता (2005);''शिक्षा में नव चिन्तन'', जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।
- अग्निहोत्री, रविन्द्र (2007);''आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याऐं एवं समाधान'', जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- भट्टाचार्य, जी0सी0 (2005);''अध्यापक शिक्षा'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- दुबे, श्यामाचरण (2005);''भारतीय समाज'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–126।
- लाल एवं पलोड़ (2007);''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'', मेरठः आर0लाल बुक डिपा।
- प्रसाद, देवी (2001);''शिक्षा का वाहनः कला'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–68,।
- पाण्डेय, राम शुक्ल (2007);''शैक्षिक नियोजन एवं वित्त प्रबन्धन'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, पृष्ठ–105, 115, 116, 124।
- शर्मा, रजनी एवं पाण्डेय, एस0पी0 (2005);''शिक्षा एवं भारतीय समाज'', तयपुरः शिक्षा प्रकाशन, पृष्ठ 128–129।
- सुखिया, एस0पी0 (2005);''विद्यालय प्रशासन एवं संगठन'', मेरठः आर0लाल बुक डिपो।
- अन्वेषिका, एन0सी0टी0ई0, नई दिल्ली।
- ''भारत की जनसंख्या'', उपकार प्रकाशन, आगरा–2.

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 1, January -March 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

- भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, विद्या भारती, लखनऊ (उ0प्र0)
- गिजुभाई बोधका –शिक्षक हों तो, पृ0 36
- राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, वार्षिक रिर्पोट नई दिल्ली– 1996–97
- शिक्षा चिन्तन, त्रिमूर्ति संस्थान, कानपुर (उ0प्र0)
- ''उत्तर–प्रदेश एक अध्ययन (शिक्षा के सन्दर्भ में) साहित्य भवन पब्लिकेशन्स'',आगरा–3.